अध्याय -6 | प्राकृतिक संकट तथा आपदाएँ

Worksheet-2

Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan
JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

बहुविकल्पी प्रश्न

1. मनुष्य पर दुष्प्रभाव वाले प्राकृतिक परिवर्तनों को कहा जाता है-

(अ) प्राकृतिक आपदाएँ (ब) मानवकृत आपदाएँ
(स) सामान्य आपदाएँ (द) इनमें से कोई नहीं।

2. बर्फानी तूफान किस तरह की प्राकृतिक आपदा है?

(अ) जीवमंडलीय (ब) जलीय
(स) भौमिकी (द) वायुमंडलीय

3. इनमें से भारत के किस राज्य में बाढ़ अधिक आती है?

(अ) बिहार (ब) उत्तर प्रदेश
(स) असम (द) पश्चिम बंगाल

4. त्रि-अकाल क्या है?

(अ) अन्न की कमी (ब) चारे की कमी
(स) जल की कमी (द) उपरोक्त सभी

5. उत्तराखंड के किस जिले में मालपा भूस्खलन आपदा घटित हुई थी?

(अ) पिथोरागढ़ (ब) चंपावत
(स) अल्मोड़ा (द) बागेश्वर

6. मानवजीवन और अर्थव्यवस्था को भारी हानि पहुँचाने वाली प्राकृतिक आपदाओं को कहा जाता है-

(अ) आपदा (ब) महाविपत्ति
(स) अकाल (द) इनमें से कोई नहीं

7. तूफान की आंख निम्न में से किससे संबंधित है?

(अ) शीतोष्ण कटिबंधीय चक्रवात से (ब) उष्णकटिबंधीय चक्रवात से
(स) सुनामी से (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

8. इनमें से कौन-से राज्य में सर्दी के महीनों में बाढ़ आती है?

(अ) केरल (ब) असम
(स) पश्चिम बंगाल (द) तमिलनाडु

9. आपदा प्रबंधन अधिनियम कब पारित हुआ?

(अ) सन् 2010 में (ब) सन् 1995 में
(स) सन् 2015 में (द) सन् 2005 में

मिशन ज्ञान
पढ़ें : जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

10. भारत का सबसे अधिक सूखाग्रस्त क्षेत्र कौन-सा है?

(अ) मध्य प्रदेश (ब) राजस्थान

(स) आंध्र प्रदेश (द) तटवत मैदानी भाग

रिक्त स्थान

11. बाढ़ की सबसे अधिक घटनाएँ _____ और गंगा के मैदानों में होती हैं।

12. भारत का चक्रवात प्रभावित क्षेत्र मुख्यतः _____ तटीय क्षेत्रों में है।

सत्य/असत्य

13. सुनामी केवल मानवजनित गतिविधियों से उत्पन्न होती है।

14. चक्रवातों का प्रभाव भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों में अधिक होता है।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

15. चक्रवात की उत्पत्ति के लिए आधारभूत आवश्यकताएँ कौन-सी हैं?

16. चक्रवात की सामान्य गति कितनी होती हैं?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

17. किस स्थिति में विकास कार्य आपदा का कारण बन सकता है?

18. भारत में भूस्खलन प्रभावित क्षेत्रों की पहचान करें और इस आपदा के निवारण के कुछ उपाय बताएँ।

निबंधात्मक प्रश्न

19. भूविज्ञान, भूआकृतिक कारक, ढाल, भूमि उपयोग, वनस्पति आवरण और मानव क्रियाकलापों के आधार पर भारत को कितने भूस्खलन क्षेत्रों में बाँटा गया है?

20. सूखे के प्रकारों के बारे में व्याख्या करें।

HOTS

21. पूर्वी भारत की बाढ़, पश्चिमी भारत की बाढ़ से अलग कैसे होती हैं?

मिशन ज्ञान
पढ़ें: जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan
JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

उत्तरमाला

1. **(अ)**
मनुष्य पर दुष्प्रभाव वाले प्राकृतिक परिवर्तनों को प्राकृतिक आपदाएँ कहा जाता है। प्राकृतिक आपदाओं के बाद फैलने वाली महामारी के कारण भी हजारों लोग मर जाते हैं।

2. **(द)** वायुमंडलीय

3. **(अ)** बिहार

4. **(द)**
जब अन्न, जल और चारा तीनों की कमी हो जाती है तो उसे त्रि- अकाल कहा जाता है जो कि सबसे अधिक विध्वंसक होता है।

5. **(अ)** पिथोरागढ़

6. **(ब)**
मानवजीवन और अर्थव्यवस्था को भारी हानि पहुँचाने वाली प्राकृतिक आपदाओं को महाविपत्ति कहा जाता है।

7. **(ब)**
यह उष्ण कटिबंधीय चक्रवात से संबंधित है। तूफान कि आंख चक्रवात का केंद्र, गरम वायु, निम्न वायुदाब और मेघ रहित क्रोड होता है।

8. **(द)** तमिलनाडु

9. **(द)**
आपदा प्रबंधन अधिनियम सन् 2005 में पारित हुआ।

10. **(ब)**
भारत का सबसे अधिक सूखाग्रस्त क्षेत्र राजस्थान है। सूखा, मानसूनी अनिश्चितता तथा अनियमितता के साथ-साथ वर्षा का असमान वितरण भारत में सखे का मल कारण है।

11. ब्रह्मपुत्र

12. पूर्वी

13. असत्य

14. असत्य

15. चक्रवात (साइक्लोन) घूमती हुई वायुराशि का नाम है। जब कमज़ोर रूप से विकसित कम दबाव के क्षेत्र के चारों ओर तापमान की क्षैतिज प्रवणता बहुत अधिक होती हैं तब उष्ण कटिबंधीय चक्रवात बनता है।

16. उष्णकटिबंधीय चक्रवात 20 से लेकर 30 मील प्रति घंटा तक के वेग से चलते हैं।

17. चक्रवात, सुनामी, बाढ़, सूखा, भूकंप आदि आपदा में आते हैं। जब नदी में बाढ़ आती है तो बाढ़ का पानी आस-पास के क्षेत्रों में फैल जाता है, तथा इस जलस्तर के उतरने के पश्चात पास की भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है। आज कई बड़े-बड़े बाँध बनाकर भूमि को सिंचित करना, जल आपूर्ति जैसे कार्य किए जाते हैं, विद्युत निर्माण, लेकिन बाँध के टूटने पर बाढ़ का खतरा पैदा हो सकता है। परमाणु शक्ति वर्तमान में ऊर्जा का प्रमुख स्रोत बन चुके हैं। उद्योगों से अर्थव्यवस्था का विकास होता है। लेकिन औद्योगिक दुर्घटना कई बार आपदा का रूप ले लेती हैं जैसे- भोपाल गैस कांड में काफी लोग मारे गए थे। ज्वालामुखी भी आपदा का ही एक रूप मानी जाती है। ज्वालामुखी के उद्गार से काली मिट्टी बनती है जो कपास की फसल के लिए उपयोगी होती है। यातायात के मार्गों के निर्माण, उद्योगों, बाँधों के निर्माण के लिए बड़ी मात्रा में वन काटे जा रहे हैं जो वर्षा को प्रभावित करता है और सूखे की वजह बनता है।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
VIDEO COURSES | QUIZ | TEST | PDF COURSES

18. भारत में भूस्खलन प्रभावित क्षेत्रों में अंडमान निकोबार, पश्चिमी घाट, हिमालय की युवा पर्वत श्रृंखलाएँ एवं उत्तर-पूर्वी क्षेत्र, भूकंप प्रभावी क्षेत्र, नीलगिरी के ज़्यादा वर्षा वाले क्षेत्र और अत्यधिक मानव क्रियाकलापों वाले क्षेत्र, जिनमें सड़क और बाँध निर्माण इत्यादि आते हैं।

हिमालय के कम वर्षा वाले क्षेत्र जैसे लद्दाख तथा उत्तर-पूर्वी क्षेत्र, भूकंप प्रभावी क्षेत्, हिमाचल प्रदेश में स्फीति क्षेत्र, अरावली पहाड़ियों में कम वर्षा वाले क्षेत्र, पश्चिमी व पूर्वी घाट के दक्कन पठार के वृष्टि छाया क्षेत्रों में कभी-कभी भूस्खलन होता है। इसके अलावा मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, गोवा, झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और केरल में खदानों और भूमि धंसने से भी भूस्खलन होता रहता है।

आपदा के निवारण के उपाय-

i. तीव्र ढाल के क्षेत्रों में सीढ़ीनुमा खेत बना देना चाहिए।

ii. पहाड़ी क्षेत्रों में वृक्षारोपण अधिक करना चाहिए।

iii. भूस्खलन वाले क्षेत्रों में सड़कों तथा गाँवों के किनारे प्रतिरोध दीवार बनाना चाहिए।

iv. अधिक ढाल वाले या भूस्खलन वाले क्षेत्रों में मकान या भवन निर्माण नहीं करना चाहिए तथा नदी की धारा अवरूद्ध न हो इसके लिए पर्वतीय क्षेत्रों में नदी के किनारे तटबंध बनाना चाहिए।

19. भूविज्ञान, भूआकृतिक कारक, ढाल, भूमिउपयोग, वनस्पति आवरण और मानव क्रियाकलापों के आधार पर भारत को विभिन्न भूस्खलन क्षेत्रों में बाँटा गया है-

i. अत्यधिक सुभेद्यता क्षेत्र- इस क्षेत्र में हिमालय की युवा पर्वत श्रृंखलाएँ अंडमान व निकोबार द्वीप समूह, पश्चिमी घाट तथा नीलगिरी के अधिक वर्षा तथा तीव्र ढाल वाले क्षेत्र, विशेषतया सड़क एवं बाँध निर्माण आदि क्षेत्र सम्मिलित किए जाते है। अत्यधिक भूस्खलन सुभेद्यता क्षेत्रों में रखे जाते हैं।

ii. अधिक सुभेद्यता क्षेत्र- अधिक भू-स्खलन सुभेद्यता क्षेत्रों में भी अत्यधिक सुभेद्यता क्षेत्रों से मिलती-जुलती परिस्थितियाँ हैं। दोनों में अंतर है, भू-स्खलन को नियंत्रण करने वाले कारकों के संयोजन, गहनता और बारंबारता का। हिमालय क्षेत्र के सारे राज्य और उत्तरी-पूर्वी भाग (असम को छोड़कर) इस क्षेत्र में शामिल हैं।

iii. मध्यम और कम सुभेद्यता क्षेत्र- पार हिमालय के कम वृष्टि वाले क्षेत्र लद्दाख और हिमाचल प्रदेश में स्पिती, अरावली पहाड़ियों में कम वर्षा वाले क्षेत्र, पश्चिमी व पूर्वी घाट के व दक्कन पठार के वृष्टि छाया क्षेत्र ऐसे इलाके हैं, जहाँ कभी-कभी भूस्खलन होता है | इसके अलावा झारखण्ड, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महारष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, गोवा और केरल में खदानों और भूमि धँसने से भूस्खलन होता रहता है।

iv. अन्य क्षेत्र- भारत के अन्य क्षेत्र विशेषकर राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल (दार्जिलिंग जिले को छोडकर), असम (कार्बी अनलोंग को छोडकर) और दक्षिण प्रांतों के तटीय क्षेत्र भूस्खलन मुक्त हैं।

20. सूखे निम्न प्रकार के होते हैं-

i. मौसम विज्ञान संबंधी सूखा- यह एक ऐसी स्थिति है, जिसमें लंबे समय तक अपर्याप्त वर्षा होती है और इसका सामयिक और स्थानिक वितरण भी असंतुलित होता है। मौसम संबंधी सूखा वर्षण वितरण पैटर्न और सांख्यिकी का एक प्रतिनिधित्व मात्र है।

ii. कृषि सूखा- इसे भूमि आर्द्रता सूखा भी कहा जाता है। मिट्टी में आर्द्रता की कमी के कारण फसलें मुरझा जाती हैं। जिन क्षेत्रों में 30 प्रतिशत से अधिक कुल बोये गए क्षेत्र में सिंचाई होती है, उन्हें सूखा प्रभावित क्षेत्र नहीं माना जाता। सूखे के कारण प्रभावित क्षेत्र की कृषि एवं वहाँ के पर्यावरण पर अत्यन्त प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था डगमगा जाती है।

मिशन ज्ञान
पढ़ो जब चाहो, जहाँ चाहो, जैसे चाहो!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

iii. **जल विज्ञान संबंधी सूखा-** यह स्थिति तब पैदा होती है जब विभिन्न जल संग्रहण, जलाशय, जलभूत और झीलों इत्यादि का स्तर वृष्टि द्वारा की जाने वाली जलापूर्ति के बाद भी नीचे गिर जाए। जलीय सूखा सतह और अवसतह जल आपूर्ति में कमी होने के रूप में परिभाषित किया जाता है जिससे सामान्य और विशेष जरूरतों के लिए प्रयोग किया जाता है।

iv. **पारिस्थितिक सूखा-** जब प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र में जल की कमी से उत्पादकता में कमी हो जाती है और परिणामस्वरूप पारिस्थितिक तंत्र में तनाव आ जाता है तथा यह क्षतिग्रस्त हो जाता है तो पारिस्थितिक सूखा कहलाता है।

21. पूर्वी भारत की बाढ़ पश्चिमी भारत की बाढ़ से अलग होती हैं इसके अंतर्गत पूर्वी भारत की नदियों में कृष्णा, कावेरी, गोदावरी, ब्रह्मपुत्र, गंगा, दामोदर, महानदी आदि प्रमुख हैं, जबकि पश्चिम भारत की नदियों में नर्मदा, ताप्ती, लूनी, माही आदि प्रमुख हैं। पूर्वी भारत में वर्षा पश्चिमी भारत की अपेक्षा ज़्यादा होने की वजह से पूर्वी भारत में बाढ़ पश्चिमी भारत की अपेक्षा ज़्यादा आती है तथा पूर्वी भारत की नदियों की बाढ़ पश्चिमी भारत की नदियों की अपेक्षा भयंकर होती है।

मिशन ज्ञान
पढ़ें: जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES